बनास जन

आई लव यू अरुणाचल प्रदेश

असग़र वजाहत की यात्राएँ

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

आई लव यू : अरुणाचल प्रदेश

परामर्श : प्रो. काशीनाथ सिंह, वाराणसी
डॉ. ममता कालिया, दिल्ली
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, जयपुर
प्रो. माधव हाड़ा, उदयपुर
श्री महादेव टोप्पो, राँची

सम्पादक : पल्लव

सहयोग : गणपत तेली, भँवरलाल मीणा

कला पक्ष : निकिता त्रिपाठी

सहयोग राशि : 30 रुपये (यह अंक)–डाक द्वारा मँगवाने पर–55 रुपये
60 रुपये (संस्थागत)–डाक द्वारा मँगवाने पर–85 रुपये
6000 रुपये–आजीवन (व्यक्तिगत)
10,000 रुपये–आजीवन (संस्थागत)

समस्त पत्र व्यवहार : पल्लव
393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एंड डी
कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088
ह्वाट्सअप : +91–8130072004 (केवल लिखित संदेश हेतु)
ई-मेल : banaasjan@gmail.com
वेबसाइट : www.notnul.com

कृपया रचनाएँ भेजने के लिए सिर्फ ई-मेल का उपयोग करें। आग्रह है कि इस संबंध में पूछताछ न करें। 'बनास जन' में सभी रचनाओं का स्वागत है।

नोट : प्रकाशित रचनाओं से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं।
संपादन एवं सह संपादन पूर्णतः अवैतनिक।
समस्त कानूनी विवादों का न्याय क्षेत्र दिल्ली न्यायालय होगा।

स्वामी-संपादक-प्रकाशक-मुद्रक पल्लव द्वारा 393, डी.डी.ए., ब्लॉक सी एण्ड डी, कनिष्क अपार्टमेंट, शालीमार बाग, दिल्ली-110088 से प्रकाशित और प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स, झिलमिल इंडस्ट्रीयल एरिया, जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095 से मुद्रित।

BANAAS JAN
Peer Reviewed Journal
(A Collection of Literature)

ISSN 2231–6558

अनुक्रम

अपनी बात 4

आई लव यू : अरुणाचल प्रदेश 5

ओडिशा यात्रा 23

परिशिष्ट

असग़र वजाहत से बनास जन का संवाद 31

टूरिज्म नहीं, सोशल टूरिज्म 35

बनास जन

साहित्य-संस्कृति का संचयन

आई लव यू : अरुणाचल प्रदेश

अपनी बात

नयी शताब्दी में जिन लेखकों के कारण कथेतर विधाओं में पाठकों की दिलचस्पी गहरी हुई है उनमें असग़र वजाहत सबसे पहले आएगा। पिछली शताब्दी के अंतिम दशक के प्रारम्भ में असग़र वजाहत की किताब 'चलते तो अच्छा था' आई थी और इसके बाद अनिल कुमार यादव की 'वह भी कोई देस है महराज', इन दोनों किताबों ने यात्राओं से पाठकों को ऐसे जोड़ा जैसे 1983 की विश्व कप विजय के बाद भारतीय खेल प्रेमी क्रिकेट के दीवाने हुए। असग़र वजाहत एक किताब या एक यात्रा तक ठहर जाने वाले नहीं हैं, यात्राएँ करना और लोगों-समाजों को नजदीक से देखना उन्हें बेहद प्रिय है।

बहुत अरसा नहीं हुआ जब उन्होंने अरुणाचल प्रदेश और ओडिशा की यात्राएँ कीं। बनास जन के आग्रह पर यहाँ के आख्यान इस अंक में विशेष रूप से दिए जा रहे हैं। पाठक देखेंगे कि एक सच्चे यात्री की तरह असग़र वजाहत इन स्थानों पर जाते हैं और यहाँ के लोगों-रीति रिवाजों को देखने-समझने की कोशिश करते हैं। इस समूची प्रक्रिया में पारम्परिक कथा साहित्य से कथेतर साहित्य की नवीनता और मौलिकता भी देखी जा सकती है। अरुणाचल प्रदेश की यात्रा करते हुए वे वहाँ के जनजीवन के वास्तविक और जीवंत चित्र ही नहीं दिखाते बल्कि अरुणाचल प्रदेश के इतिहास और संस्कृति से भी परिचित करवाते हैं। यात्रा के बीच में कहीं कहीं ऐसे मार्मिक कथन आ गए हैं जो देर तक याद रह जाने वाले हैं। एक जगह उनके अपनी पसंद के खाने के बारे में पूछने पर उनका जवाब था, ''जो कुछ आप लोग खाते हैं, वह सब मैं खा पी सकता हूँ। मेरा ऐसा मानना है कि दूसरे लोग जो कर सकते हैं वह मैं भी कर सकता हूँ। दूसरे लोग जो खा सकते हैं, मैं भी खा सकता हूँ। मैं मानता हूँ लोग बहुत समझदार हैं और उनका इतिहास बहुत पुराना है। मनुष्य के जीवन के लिए जो कुछ खतरनाक था उसे छोड़ा जा चुका है और अब जो कुछ बचा है वह मनुष्य के लिए, जीवन के लिए खतरनाक नहीं है।''

ओडिशा यात्रा उनके यात्रा लेखन का नया पड़ाव है जहाँ एक गाँव देखने के लिए वे बस और मोटरसाइकिल की कष्टप्रद यात्रा करते हैं। यहाँ शुरुआत में आया यह अंश देखिये--

पक्की उम्र के एक किसान पूरी माँझी बताने लगे कि वे एक ऐसे पेड़ के इर्द-गिर्द सफाई करके आए हैं जिसकी पत्तियों को खाया जाता है। उन्होंने इस पेड़ का नाम कूल्हे बताया। क्योंकि मुझे इस बात की जानकारी नहीं थी किसलिए मैं उनके साथ उस पेड़ को देखने गया। पेड़ का चित्र और उनके कुछ चित्र लेने के बाद मैंने उनसे पूछा कि इस पेड़ की पत्तियाँ खाने से क्या फायदा होता है तो उन्होंने एक ऐसा जवाब दिया कि मैं बिल्कुल खामोश हो गया ।

उन्होंने कहा--पेट भरता है।

वहाँ एक पुराने राजा के वंशज से मिलना और उनसे पाठकों को मिलवाना बेहद रोचक है। खास बात यह है कि जीवन की ऊँच-नीच और मामूली लोगों की मुसीबतें कभी असग़र वजाहत की आँखों से ओझल नहीं होते।

इनके साथ ही उनके यात्रा लेखन के सम्बन्ध में एक बातचीत भी इस अंक का आकर्षण है जिसमें उनके पुराने यात्रा आख्यानों पर भी संवाद है। इसी बातचीत में उन्होंने हिंदी समाज के यात्रा प्रिय न होने का कारण खोजते हुए कहा है, ''संपन्न समाज प्रायः यथास्थितिवादी हो जाते हैं। यात्राएँ यथास्थिति को खण्डित करती हैं। विश्वासों और मान्यताओं को हिला देती हैं और समाज पर नियंत्रण रखने वाली शक्तियाँ कभी नहीं चाहती थी कि 'बाहर' की हवा आकर उनको विचलित कर दे।'' असग़र वजाहत यात्राओं के सम्बन्ध में जिस सोशल टूरिज्म पर जोर देते हैं, उसके तमाम पक्षों को बताती हुई उनकी एक टिप्पणी भी परिशिष्ट में दी गई है। चित्रों के लिए जमुना बीनी जी का आभार।

आशा है पाठकों को यह अंक पसंद आएगा।

पल्लव